ॐ

चेतावनी

दुनियां नाम मक्कर का साधो इससे हाथ सकोड़ो ।
अहिंस आत्म मान मग्न हो काम क्रोध को छोड़ो ॥
माया जाल पदार्थ चोंगी फंसौ जीव अज्ञानी ।
धन जोड़नको दश दिश धायौ भटकौ पशू समाना ॥
शास्त्र वाक्य को मानों नाहीं मनमुखी उरझाना ।
गधर्व ज्यों हठको नहिं त्यागत ममता ज्यों लिपटानी ॥
दारा मीत पूत संबन्धी सबका हित धन केरा ।
देखें पूछें सेवें पूजें सब मतलब का झेरा ॥
निर्धन को कोई पूछै नाहीं मूर्ख जान निकालें ।
आये को आदर नहिं देवें दुःख ज्यों ताकों टारें ॥
दीन दयाल सर्व दुःख भंजन ताका मर्म न जाना
सुमिरौ आदि पुरुष परमेश्वर सत्यरुप समाना ॥

---

(१)

दौड़े मत वैराग्य भज, चिन्तायें दे छोड़।
विषयों से मुख मोड़कर, शिव माहीं मन जोड़॥
शिव माहीं मन जोड़, विषय मिथ्या क्षणभङ्गुर।
बाधें देवें दुःख हरिण कूं जैसे वागुर॥
चित्त! बात ले मान, विषय हैं फुंसी फोड़े।
घर अपने में बैठ, मौन भजले, मत दौड़े॥

(२)

जैसे लड्डू विष मिले, तैसे ही हैं भोग।
जन्म जन्म हैं मारते, उपजाते भव रोग॥
उपजाते भव रोग, मारते सिसका सिसका।
हुआ भोग आसक्त, नाश ही देखा तिसका॥
चित्त! बात ले मान, त्याग भोगेच्छा ऐसे।
जैसे त्यागत सर्प, दूर से बिष्ठा जैसे॥

(३)

तृष्णा मतकर भोग की, तृष्णा पीड़ा देय।
तृष्णा करता मूढ़ जो, कभी नहीं सुख लेय॥
कभी नहीं सुख लेय, दुःख निशदिन है सहता।
जहाँ जहाँ ही जाय, रुदन करता ही रहता॥
चित्त! बात ले मान, डसे ज्यों सर्पिन कृष्णा।
त्योहीं करत अचेत, मूढ़ कूं पापिन तृष्णा॥

(४)

तृष्णा त्यागत धीर जे, वे ही हैं नर धन्य।
पाते अविचल शान्ति हैं, होते हैं जग मन्य॥
होते हैं जग मन्य, ब्रह्म रस अक्षय चखते।
ब्राह्मादिक ऐश्वर्य, चाह भी नाहीं रखते॥
चित्त! बात ले मान, शान्तिदा यथा वितृष्णा।
तथा न हरिहर लोक, त्याग दे विष सम तृष्णा॥

(५)

धन आदिक में सक्त हो, इधर उधर मत दौड़ ।
आशक्ति कर संतोष की, तृष्णा का शिर तोड़ ॥
तृष्णा का शिर तोड़, भार शिर पर मत ढो रे ।
धरकर जोखम पास, जान प्यारी मत खो रे ॥
चित्त ! बात ले मान, बाँधते है पुत्रादिक ।
तजदे सबका स्नेह, पास मत रख धन आदिक ॥

(६)

धन से उपजे काम है, धन से उपजे क्रोध ।
धन से होता गर्व है, धन से जावे बोध ॥
धन से जावे बोध, मोह लोभ आदिक आते ।
धन को लूटत चोर, बन्धु राजादि सताते ॥
चित्त ! बात ले मान, दूर रह रे दुर्जन से ।
चिन्ता से भी दूर, दूर आपत से धन से ॥

(७)

करता बहिरा द्रव्य है, करता अन्धा द्रव्य।
गूङ्गा करता द्रव्य है, गात्र फुलाता द्रव्य॥
गात्र फुलाता द्रव्य, द्रव्य है रोग अनोखा।
को ऐसा है धीर, द्रव्य से खाय न धोखा॥
चित्त! बात ले मान, द्रव्य है सुध बुध हरता।
देख द्रव्य के दोष, चाह क्यों धन की करता॥

(८)

चिन्ता घूंटे सेठ को, नींद न लेने देय।
निर्धन टूटी खाट पर, सुख से निद्रा लेय॥
सुख से निद्रा लेय, किसी का नाहीं खटका।
स्वप्न माँहि भी सेठ, भरी माया में भटका॥
चित्त! बात ले मान, सुखी निर्धन निश्चिन्ता।
हो जा तू निश्चिन्त, करे मत धन की चिन्ता॥

(९)

लक्ष्मी अति है चंचला, प्यारा ताहि न कोय।
अपनी करना चाहता, मूढ़ महा है सोय॥
मूढ़ महा है सोय, उर्ध्व सो गंगा बहता।
करता शीतल सूर्य, चन्द्रको तप्त बनाता॥
चित्त! बात ले मान, लगाले शिव सम भस्मी।
भज फिर सादर विष्णु, फिरेगी पीछे लक्ष्मी॥

(१०)

नारी नरक समान है, हाड़ माँस सन्दोह।
शोभन उसमें कुछ नहीं, मूढ़ करे मत मोह॥
मूढ़ करे मत मोह, अङ्ग सर्व करके न्यारे।
पीछे देख बिचार, नारियें सुन्दर क्या रे॥
चित्त! बात ले मान, मोह महिमा तज भारी।
नरक स्वर्ग मत मान, जान मत शोभन नारी॥

(११)

कामी दूषित काम से, आँख लेय हैं मींच।
मलमय युवती देह कूँ, सुन्दर देखत नीच॥
सुन्दर देखत नीच, काम बश ऐसे होते।
खोते हैं बल वीर्य, धर्म तक भी हैं खोते॥
चित्त! बात ले मान, सदा हो आत्मा रामी।
सावधान रह स्वस्थ, मती हो अन्धा कामी॥

(१२)

नारी कारण मोह की, यही पाप की मूल।
यही कारण दुःख की, देय यही बहु शूल॥
देय यही बहु शूल, जन्म यही है देती।
यह ही देती नरक, प्राण है यह ही लेती॥
चित्त! बात ले मान, नित्य भज कृष्ण मुरारी।
मातायें सब देख, देख मत कोई नारी॥

(१३)

अविवेकी ही काम बश, कामिनि मर्कट होय।
धीर विवेकी काम का, बीज तलक दे खोय॥
बीज तलक दे खोय, सर्वथा तजता नारी।
होता सुखी स्वतंत्र, नहीं वन्धुआ संसारी॥
चित्त! बात ले मान, त्याग इच्छा मरने की।
मरण कामिनी संग, चाहते नर अविवेकी॥

(१४)

नारिन कूँ प्यारा नहीं, नहीं कु प्यारा कोय।
जबतक जिसमें स्वार्थ हो, तबतक प्यारा सोय॥
तबतक प्यारो सोय, गरज जब तक है जिससे।
अर्थ हुआ निजसिद्ध, कामफिर किसका किससे॥
चित्त! बात ले मान, वित्त प्यारा नारिन कूं।
त्योंही प्यारा काम, अन्य नाहीं नारिन कूं॥

(१५)

बांधत तब तक हैं सगे, जब तक तू बलयुक्त।
कोई नाहीं है सगा, जब तूं हो बल मुक्त॥
जब तू हो बल मुक्त, मृतक हो अथवा रोगी।
कोई पास न आय, प्रेत माने या भोगी॥
चित्त! बात ले मान, प्रेम से भजले माधव।
जब तक थाली भात, तभी तक साथी बांधव॥

(१६)

नारी हैं दो भांति की, बंधकारिणी एक।
मोक्ष कारिणी दूसरी, देती तत्व विवेक॥
देती तत्व विवेक, नाम देवी है जिसका।
बंधकारिणी अन्य, नाम है आसुरी तिसका॥
चित्त! बात लो मान, पूज देवी महतारी।
त्याग आसुरी दूर, आसुरी कामिनी नारी॥

(१७)

देता सुख ना पुत्र है, ना सुख देती दार।
देता सुख धन धाम ना, ना सुख दे परिवार ॥
ना सुख दे परिवार, दुःख हैं सब ही देते।
एक मिलत दे शान्ति, अन्य बिछुड़त हर लेते ॥
चित्त ! बात ले मान मोल क्यों पीड़ा लेता।
जो अपना सुख त्याग, अन्य में मन है देता ॥

(१८)

कोई चाहत पुत्र है, कोई चाहता दार।
चाह चमारी बस हुआ, दुःखी सब संसार ॥
दुःखी सब संसार, सुखी ना कोई पाया।
सुखी हुआ सो धीर, चाह से चित्त हटाया ॥
चित्त ! बात ले मान, चाह ने मति है खोई।
सुख दाई होवे इष्ट, मती कर इच्छा कोई ॥

(१९)

ढांचा हड्डी मांस का, परम अशोभन देह।
देता है शिक्षा यही, करो न मुझ से नेह॥
करो न मुझ से नेह, वस्त्र भोजन दे दीजे।
ईश्वर अनुसंधान, काम मुझ से ले लीजे॥
चित्त! बात ले मान, सुमिर ले ईश्वर सांचा।
करले सफल स्वदेह, मांस हड्डी का ढांचा॥

(२०)

आता दिन है रात फिर, गयी रात दिन आय।
रात दिवस के चक्र में, आयुष बीता जाय॥
आयुष बीता जाय, आज गर्मी कल जाड़ा।
नाहीं चेतत मूढ़, काल है शिर पर ठाड़ा॥
चित्त! बात ले मान, आयु है बीता जाता।
भज कालेश सुजान, काल है दौड़ा आता॥

(२१)

अस्थिर नश्वर देह है, नित्य उसे मत मान।
नित्य मानना देह का, पाप मूल है जान॥
पाप मूल है जान, क्षणिक को नित्य समझता।
शाश्वत देही छोड़, देह नश्वर को भजता॥
चित्त! बात ले मान. नित्य भज शाश्वत ईश्वर।
कभी भजै मत देह, अपावन नश्वर अस्थिर॥

(२२)

सागर पृथ्वी चन्द्र रवि, देह दनुज यम इन्द्र।
तारे ध्रुव नभ वायु, अज काल अग्नि हरि रुद्र॥
काल अग्नि हरि रुद्र, अन्त सब का है आता।
जितना यह है दृश्य, नहीं कुछ रहने पाता॥
चित्त! बात ले मान, फोड़ दे अभिमति गागर।
भजले अपना आप, पूर्ण अक्षय सुख सागर॥

(२३)

शब्दादिक हैं निरस अति, मतकर उन में राग।
सब ही इच्छा छोड़कर, कर हरि में अनुराग॥
कर हरि में अनुराग, मोड़ सब से ही मुख ले।
चढ़ विराग प्रासाद, मात्र भगवत का सुख ले॥
चित्त ! बात ले मान, नित्य भज शमदम आदिक।
यदि ! सुख अक्षय इष्ट, दुःखदा तज शब्दादिक॥

(२४)

विद्या रूप कुलादि का, करे मती अभिमान।
ऊपर से रमणीय हैं, सार न उनमें मान॥
सार न उनमें मान, प्रीति उनमें मत कर रे।
उनमें करना प्रीति, जान दुःखों का घर रे॥
चित्त ! बात ले मान, क्लेश का मूल अविद्या।
सुखशाश्वत है देय, ब्रह्म विद्या ना विद्या॥

(२५)

ग्रन्थों का पढ़ना अधिक, मन वाणी का खेद।
वेद शास्त्र का पठन भी, देता मस्तक छेद॥
देता मस्तक छेद, शोक चिन्ता उपजावत।
चंचल करता चित्त, बुद्धि विक्षेप बढ़ावत॥
चित्त ! बात ले मान, समागम कर सन्तों का।
पढ़े मती कुग्रन्थ, पाठकर सद ग्रन्थों का॥

(२६)

वर्णादिक अभिमान भी, है अनर्थ का हेतु।
करता अपयश है यही, अन्त नरक का सेतु॥
अन्त नरक का सेतु, प्रतिष्ठा मान बड़ाई।
ज्ञान माहिं है आड़, कपट धोखा चतुराई॥
चित्त ! बात ले मान, छोड़ दे दंभ छलादिक।
पूजा मान न चाह, देह कल्पित वर्णादिक॥

(२७)

मायामय ये विषय सब, मूढ़न लेय लुभाय।
धीर पुरुष भोगे उन्हें, मन उनमें न लगाय॥
मन उनमें न लगाय, राग ना उनमें राखें।
मूढ़ करें जो राग, ब्रह्मरस कभी न चाखें॥
चित्त! बात ले मान, सदा भज देव अनामय।
विषय आश दे त्याग, विषय हैं सब मायामय॥

(२८)

विषयों माहीं सुख नहीं, सुख छाया है मात्र।
मूढ़ पुरुष जाने नहीं, मानें हैं सुख मात्र॥
मानें हैं सुख मात्र, आपका सुख ना जानें।
सुख है अपना आप, मूढ़ विषयों में मानें॥
चित्त! बात ले मान, कहीं भी सुख है नाहीं।
यदि है सुख की चाह, रमें मत विषयों माहीं॥

(२९)

आशा के जे दास हैं, सबके वे हैं दास।
सब ही उनके दास हैं, जिनकी दासी आश॥
जिनकी दासी आश, पूज्य सब के वे होते।
निश्चिन्ता निर्द्वन्द, जागते सुख से सोते॥
चित्त! बात ले मान, मित्र! भज पूर्ण निराशा।
सादर भज विश्वेश, पूर्ण हो सब ही आशा॥

(३०)

ब्रह्मादिक के लोक भी, नहीं दुःख से मुक्त।
नश्वर तो हैं सर्व ही, कुछ रागादिक युक्त॥
कुछ रागादिक युक्त, वहां सुख ना हो सक्ता।
काल खड़ा जहँ शीश, कौन सुख से सो सक्ता॥
चित्त! बात ले मान, मती चाहे स्वर्गादिक।
इन्द्रादिक हैं तुच्छ, सत्य नाहीं ब्रह्मादिक॥

(३१)

भावी होके ही रहे, सके न कोई टार।
ना भावी होवे नहीं, करो उपाय हजार॥
करो उपाय हजार, टरत भावी है नाहीं।
होना हो सो होय, उसी ही क्षण के माहीं॥
चित्त! बात ले मान, ईश ले भज मायावी।
आशा दे सब छोड़, करेगी फिर क्या भावी॥

(३२)

सूखे रूखे अन्न से, भरले केवल पेट।
जूना मैला चीथड़ा, ले तन माहिं लपेट॥
ले तन माहिं लपेट, द्वार मानिन के मत जा।
पीले नदी नीर, वृक्ष के नीचे डट जा॥
चित्त! बात लो मान, देह फूलो या सूखे
दीन न हो खा पत्र, वृक्ष के रूखे सूखे॥

(३३)

दीन्हा जिसने पेट है, सोही देगा अन्न।
क्यों तू चिन्ता कर रहा, क्यों होता है खिन्न॥
क्यों होता है खिन्न, पेट की चिन्ता मत कर।
दूध दिया जो धूर्त, अन्न सो देगा मत डर॥
चित्त ! बात ले मान, कर्म वश खाना पीना।
वही करेगा वृद्ध, जन्म जिसने है दीन्हा॥

(३४)

नाहीं तृष्णा जाय है जब तक है अविवेक।
तृष्णा तब ही जाय है, जब हो पूर्ण विवेक॥
जब हो पूर्ण विवेक, तत्व सम्यक पहिचाने।
तबही तृष्णा जाय, नाहीं जावे बिनु जाने॥
चित्त ! बात ले मान, शीघ्र जा ज्ञानिन माँही।
जब तक हो न ज्ञान, जायगी तृष्णा नाहीं॥

(३५)

नाहीं सुख है भोग में, कर रे नित्य विचार।
जो कुछ है यह दीखता, सब ही है निस्सार॥
सब ही है निस्सार, सार है केवल आत्मा।
भजले आत्मासार, त्याग दे दृश्य अनात्मा॥
चित्त! बात लो मान, पूर्ण सुख आत्मा माँहीं।
आत्मा सुख है आप, अन्य में सुख है नाहीं॥

(३६)

पाते सुख हैं धीर वे, करते जे पुरुषार्थ।
उद्यम बिनु नर मूढ़को, कुछ नहीं आवे हाथ॥
कुछ नहीं आवे हाथ, यत्न बिनु बैठे बैठे।
मुख डाला भी ग्रास, यत्न बिनु पेट न पैठे॥
चित्त! बात ले मान, बुद्धि जे सूक्ष्म बनाते।
वे ही पाते ज्ञान, मोक्ष भी वेही पाते॥

(३७)

जाकर वस एकान्त में, कुछ भी मत रख पास ।
सबही आशा छोड़कर, कर ईश्वर की आश ॥
कर ईश्वर की आश, उसी में बुद्धि लगा रे ।
कर उस में ही प्रेम, अन्य से प्रेम हटा रे ॥
चित्त ! बात ले मान, सर्व से हाथ छुड़ाकर ।
भजले अपना आप; दूर घर से वन जाकर ॥

(३८)

गाथा पढ़ नचिकेत की; जाकर बन एकान्त ।
पढ़ि विचार एकाग्र मन, सोच समझ हो शान्त ॥
सोच समझ हो शान्त, विषय सब तुच्छ समझ रे।
भोगों से मुख मोड़, शान्त शिव सादर भज रे ॥
चित्त ! बात ले मान, वेद वैराग्य सिखाता ।
तजदे सम्यक राग, सुमिर नचिकेता गाथा ॥

(३९)

भोगों माहीं मत फसे, पढ़ पढ़कर कु ग्रन्थ।
शिक्षा ले वैराग्य की, पढ़ पढ़कर सद्ग्रन्थ॥
पढ़ पढ़कर सद्ग्रन्थ, आश विषयों की तज रे।
अन्य कर्म सब छोड़, शान्त सच्चित शिव भज रे॥
चित्त! बात ले मान, जगत में सुख है नाहीं।
पद पदपर है दुःख, चक्र चौरासी माहीं॥

(४०)

साधन भव से मुक्ति का, मात्र एक वैराग्य।
जिसमें है वैराग्य ना, फूटा उसका भाग्य॥
फूटा उसको भाग्य, मूढ़ जो ईश्वर त्यागा।
सुखमय ईश्वर छोड़, विषय भोगों में लागा॥
चित्त! बात ले मान, नित्यकर हरिका आराधन।
अन्य धर्म दे त्याग, मुक्ति का यही है साधन॥

इति वैराग्य प्रकरण

निजानन्द

पालिया जो कुछ था पाना काम क्या बाकी रहा।
जानना था सोई जाना काम क्या बाकी रहा॥
लाख चौरासी के चक्र से थका खोली कमर।
अब रहा आराम पाना काम क्या बाकी रहा॥
डाल दो हथियार मेरी राह पुख्ता हो गई।
लग गया पूरा निशानो काम क्या बाकी रहा॥
रम्ज़ है तौहीद की यहाँ हुकमा की हिकमत तंग है।
हो गया दिल भी दिवाना काम क्या बाकी रहा॥
मर गये आलिम वफाजिल इल्म की तहकीक में।
भरम है सब पढ़ना पढ़ना काम क्या बाकी रहा॥
द्वैत अद्वैत के झगड़ों में पढ़ना है फिजूल।
अपने दातों को घिसाना, काम क्या बाकी रहा॥
होने दो जो हो रहा है, मत किसी से कुछ कहो।
संत होकर किसी को सताना, काम क्या बाकी रहा॥
जानकर मन में मियां मौला का मेला सब जगत्।
फिर बनू क्यों मौलाना काम क्या बाकी रहा॥
घोर निद्रा से जगाया सत गुरु ने वाह वाह।
अब नहीं सोना सुलाना, काम क्या बाकी रहा॥

देह के प्रारब्ध से मिलता है सब को सर्व कुछ।
फिर जगत् को क्यों रिझाना काम क्या बाकी रहा॥
क्या करुगां मिल धनी लोगों से धन्धा कर चुका।
अब तो सब से मांग खाना काम क्या बाकी रहा॥
कुछ किसी से मत कहो, रहो टांगे पसार।
अब नहीं आना न जाना काम क्या बाकी रहा॥
दे दे के डंका सारी शंका हो गई फता।
अब मिला निर्भय ठिकाना, काम क्या बाकी रहा॥

समा